विचार-प्रवाह देहरादून बुधवार 10 जून 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

शिक्षा में सबसे ज्यादा ताकत होती है जिससे पूरी दुनिया को बदला जा सकता है।
– अज्ञात

जॉर्ज फ्लॉयड एक अश्वेत व्यक्ति

कोरोना से इसका कोई सीधा संबंध शायद ही जोड़ा जा सके, लेकिन इसके खिलाफ उमड़े आक्रोश की वजह यह है कि अमेरिकी पुलिस–प्रशासन में गहरे पैठे पूर्वाग्रह की कीमत अश्वेत आबादी को हर हाल में चुकानी पड़ती है।

रमेश जोशी।

कोरोना महामारी से जूझते अमेरिका में अश्वेतों के उग्र, देशव्यापी प्रदर्शनों से एक नई समस्या खड़ी हो गई है। जॉर्ज फ्लॉयड नाम के एक अश्वेत व्यक्ति की दिनदहाड़े, लबेसड़क पुलिस के हाथों हुई मौत इन प्रदर्शनों की जड़ में है। कोरोना से इसका कोई सीधा संबंध शायद ही जोड़ा जा सके, लेकिन इसके खिलाफ उमड़े आक्रोश की वजह यह है कि अमेरिकी पुलिस–प्रशासन में गहरे पैठे पूर्वाग्रह की कीमत अश्वेत आबादी को हर हाल में चुकानी पड़ती है।

कोरोना वायरस का प्रकोप फैलना शुरू हुआ तो उसे 'द ग्रेट इक्वलाइजर' कहा गया। यानी यह कि वायरस अमीर–गरीब में फर्क नहीं करता। मगर अनुभव ने धीरे–धीरे इस धारणा को गलत साबित किया। इसकी मार भी सबसे ज्यादा अमेरिका के कमजोर तबकों पर ही पड़ी, जिसमें बहुसंख्या अश्वेतों की है। कोरोना से होने वाली मौतों में श्वेत आबादी के मुकाबले अश्वेतों का अनुपात ढाई गुने से भी ज्यादा है।

श्वेतों में मौत का आंकड़ा 20.7 प्रति लाख है जबकि अश्वेत आबादी में यह 50.3 पाया गया है। इसके कई कारण हैं। एक तो ज्यादातर अश्वेत लोगों की जीविका सड़क से ही निकलती है जहां उनके संक्रमित होने की संभावना ज्यादा है। दूसरे उनके रहन–सहन की स्थिति और खान–पान ऐसा नहीं है कि उनका शरीर बीमारी से पर्याप्त प्रतिरोध कर सके। तीसरे, समय से अस्पताल जाने के लिए जरूरी रकम का इंतजाम वे नहीं कर पाते और इलाज शुरू होने तक देर हो चुकी होती है। स्वाभाविक है कि महामारी जैसी स्थितियों में शासन से राहत पाने की उम्मीद और जरूरत सबसे ज्यादा इन्हीं में होती है। यह उम्मीद टूटने से उपजी निराशा उन्हें जहां–तहां विरोध की ओर ले जाती है जिसके चलते पुलिस की अतिरिक्त मार भी उनके हिस्से आ जाती है। किसी भी लोकतांत्रिक समाज में इन परिस्थितियों को निर्णायक रूप में बदलने का उपकरण राजनीति ही हो सकती है। पर दुनिया के कई अन्य देशों की तरह अमेरिका में भी परिस्थितियों का संयोग कुछ ऐसा बना है कि चुनावी राजनीति के एक हिस्से को कमजोर तबकों के तीखे होते संघर्ष में अपना फायदा दिख रहा है। संभवतः यही वजह है कि इन प्रदर्शनों के मद्देनजर राष्ट्रपति ट्रंप के शुरुआती बयान ऐसे नहीं रहे जिनसे प्रदर्शनकारियों की आहत भावनाओं को सुकून मिलता। उलटे उनके ट्वीट्स से भावनाएं इतनी भड़क गईं कि प्रदर्शनकारी वाइट हाउस तक आ गए और एहतियातन राष्ट्रपति को वाइट हाउस के एक सुरक्षित बंकर में ले जाना पड़ा। ट्रंप के राजनीतिक सलाहकारों को ऐसा लग सकता है कि करीब 12 फीसदी अश्वेत आबादी के तीखे होते प्रदर्शनों से आम अमेरिकियों में बढ़ता असुरक्षाबोध उनके वोट बढ़ाएगा, लेकिन एक लोकतांत्रिक समाज में सर्वसमावेशी राजनीति ही अंततः ज्यादा दूर तक जाती है। इसी समझ का संकेत ट्रंप के प्रतिद्वंद्वी और डेमोक्रैटिक प्रत्याशी जोसफ बाइडेन की उस पहल में मिला जिसमें उन्होंने जॉर्ज फ्लॉयड के परिवार से बातचीत की और प्रदर्शनकारियों के साथ वार्ता प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की बात कही।

चेतना

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। कार्लमार्क्सीय वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष से हटकर वर्गीय सामंजस्य की रामराज्य अवधारणा जूठे बेरों की अंतश्चेतना में सन्निहित है। ये जूठे बेर एक असहाय वृद्धा द्वारा एक निष्कासित राजकुमार के स्वागत मात्र के लिए प्रतिष्ठा नहीं पाते वरन् इनका संघटन कुछ बेहद महत्वपूर्ण निष्कर्षों को उद्‌घाटित करता है। हम क्रमवार इन्हें समझने की कोशिश करते हैं ताकि त्रेतायुगीन सामाजिक क्रांति की परिघटना को कलियुगी सामाजिक सम्मिलन कार्यक्रमों से एकीकृत किया जा सके। निषादराज द्वारा नदी पार कराने के दृष्टांत से शुरू होकर भीलनी शबरी के हाथों जूठे बेरों का सहर्ष स्वीकरण, आदिम जनजातियों से स्वागतित और समर्थित होने के पश्चात एक शूद्र के मिथ्यारोपण मात्र से धर्मपत्नी के त्याग की संपूर्ण घटना महाक्रांतिकारी है, जिसकी तुलना आर्यावर्त के किसी भी अन्य कालखण्ड से नहीं की जा सकती है।

संपादकीय

बड़ा योगदान

जैव विविधता के लिए जंगलों में हाथियों का होना जरूरी है। पुरानी वनस्पतियों को हटाकर नई के लिए जगह बनाने में उनका बड़ा योगदान है। उनके गोबर में कई ऐसे बीज होते हैं जो पेड़–पौधों की उत्पत्ति में सहायक होते हैं। सूखे के वक्त हाथी नदी किनारे की जमीन खोदकर पानी निकालते हैं। ऐसे में अन्य जीव भी अपनी प्यास बुझाने के लिए उन पर आश्रित होते हैं। जंगलों में उनके बनाए रास्ते दूसरे जीव–जंतुओं की मदद करते हैं। मनुष्य को भी उनके प्रति संवेदनशील रहना होगा और अपनी मानवता से दिखाना होगा कि वह सही मायने में मनुष्य है। बच्चों के पालन–पोषण में युवा मादा हाथी जो ज्यादातर बहनें होती हैं, नानियों की मदद करती हैं। जब मूड अच्छा होता है तो हाथी एक–दूसरे से खेलते हैं। दोस्ताना झगड़े करते हैं। इनके झुंड में चलने का भी तौर–तरीका होता है। सबसे आगे नेतृत्व करने वाली मादा होती है। उसके पीछे दूसरी मादाएं होती हैं। बच्चे अपनी मां की पूंछ से सटकर झुंड के बीच में चलते हैं।

खतरे के समय हाथी एकदम से आक्रामक होने के बजाय बुद्धि से काम लेते हैं। सबसे अनुभवी मादा आगे होती है। वह सुरक्षात्मक रवैये से खतरे का सामना करते हुए बाकी झुंड को बचाती है। नेतृत्व करने वाली सबसे उम्रदराज हथिनी होती है। उसके अनुभव और ज्ञान से ही समूह या झुंड संचालित होता है। नर हाथी का काम बहुधा सिर्फ प्रजनन तक सीमित होता है। झुंड में मादाओं और बच्चों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। बच्चों को बड़ा करने की जिम्मेदारी ज्यादातर उनकी नानी–दादी संभालती हैं। इनका आपसी दूरसंचार अद्‌भुत होता है। तरह–तरह की आवाजों, पेड़ों पर घर्षण और चिंघाड़ने में अलग–अलग तरह के संदेश छिपे होते हैं। वैज्ञानिकों ने ऐसे सत्तर संदेश दर्ज किए हैं।

फ०रेस्ट रिजर्व को हाथियों ने अपना घर मान लिया। इस घटना के तेरह साल बाद लॉरेंस की 61 साल की उम्र में हार्ट अटैक से मौत हो गई। न जाने कैसे यह बात मीलों दूर हाथियों को पता चल गई।

हाथियों की जान

सुधीर मिश्र

जंगलों के संरक्षण पर काम करने वाले लॉरेंस एंथोनी की मशहूर किताब है– द एलिफेंट व्हिस्पर। दक्षिण अफ्रीका के जुलू लैंड की यह सच्ची कहानी है। जंगली हाथियों से होने वाले नुकसान से ग्रामीण आजिज आ चुके थे। लॉरेंस एक फॉरेस्ट रिजर्व की देखरेख करते थे। उनसे अनुरोध किया गया कि इन हाथियों को वह अपने अभयारण्य में ले जाएं। वह समझ गए कि अगर ना कहा तो हाथियों की जान बचाना मुश्किल हो जाएगा। हाथी या किसी भी अन्य जंगली जानवर को उसके प्राकृतिक निवास से बाहर निकालकर कहीं और बसाना आसान नहीं होता। लॉरेंस हाथियों को रिजर्व तक ले तो आए, पर झुंड वहां रुकने को तैयार नहीं था।

इस समूह के साथ एक समस्या थी। उसकी पुरानी नेता की अकस्मात मौत हो चुकी थी। नई लीडर नाना अभी अपने काम को समझ ही रही थी। रोजाना यह समूह बाड़ तोड़कर निकलने की कोशिश करता। लॉरेंस एंथोनी हाथियों की जान बचाने के लिए जी–जान से लगे रहे। रोजाना रात में जब नाना बाड़ को तोड़ने आती तो लॉरेंस दूर से खड़े होकर चिल्लाते। उसे बोल–बोलकर खतरों से आगाह करते। उनका यह तरीका बाकी लोगों को अचंभे में डालता था।

यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा। एक रात नाना ने बाड़ तोड़ने की कोशिश नहीं की। उसने अपनी सूंड़ बढ़ाकर लॉरेंस के कंधे पर रख दी। वह समझ चुकी थी कि यह शख्स उनका हमदर्द है। धीरे–धीरे यह दोस्ती गहरी होती गई। फॉरेस्ट रिजर्व को हाथियों ने अपना घर मान लिया। इस घटना के तेरह साल बाद लॉरेंस की 61 साल की उम्र में हार्ट अटैक से मौत हो गई। न जाने कैसे यह बात मीलों दूर हाथियों को पता चल गई। हाथियों का वही समूह घंटों का सफर तय करके उनके घर पहुंच गया। दो दिन तक हाथियों ने वहां रहकर अपना शोक प्रकट किया। जीव वैज्ञानिक हाथियों के इस हैरतअंगेज व्यवहार को नहीं समझ पाए। खासतौर पर इस बात को कि हाथियों को कैसे पता चला कि लॉरेंस नहीं रहे। लॉरेंस और हाथियों के इस रिश्ते का जिक्र इस वक्त प्रासंगिक है। सह–अस्तित्व और संवेदना का यह अलग ही स्तर रहा होगा।

केरल में एक हथिनी को जिस तरह क्रूरता से मारा गया है, उसकी देश–दुनिया में काफी आलोचना हो रही है। वैसे यह सिलसिला लंबे समय से चल रहा है। कीमती हाथी दांत के लिए वे हमेशा शिकारियों के निशाने पर रहते ही हैं। फिर जैसे–जैसे अंधाधुंध विकास की रफ्तार बढ़ी, एशिया से लेकर अफ्रीका तक में हाथियों की मुसीबत शुरू हो गई। शोधकर्ताओं की मानें तो हाथियों की अपनी दुनिया समझदारी से भरी है। हिंदू और बौद्ध संस्कृति में हाथी शक्ति, शौर्य और धैर्य का प्रतीक है। आम जनमानस की कहावतों तक में हाथी को एक बेहद समझदार जीव के रूप में पहचाना जाता है। ऐसी ही एक कहावत है– हाथी चले बजार, कुत्ता भूंके हजार। कुत्ते भौंकते रहते हैं, हाथी अपने रास्ते निकलते हैं।

यह सिर्फ कहावत नहीं है। जीव वैज्ञानिक मानते हैं कि हाथी दुनिया के सबसे समझदार जीवों में एक है। मनुष्यों की तरह वह बेहद पारिवारिक है। कई बार वे अपने रिश्तों में मनुष्य के मुकाबले कहीं ज्यादा ईमानदार और संवेदनशील पाए गए हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक हाथी बरसों तक रिश्तों और अनुभवों को नहीं भूलते। इनकी उम्र 70–75 साल तक की होती है।

सूडोकु नवताल-5373

★★★★☆
मध्यम

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5372 का हल

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1

अपना ब्लॉग

कोरोना राष्ट्रीय आपदा है

मोहन। कोरोना राष्ट्रीय आपदा है और देश के कई हिस्सों की तरह बिहार के लोग भी इसी तरह इसे ले रहे हैं। पर यह नहीं भूलना चाहिए कि बिहार के लिए यह चुनावी वर्ष है। कुछ ही हफ्तों बाद कोरोना से लोगों को बचाने में सरकार की सफलता–विफलता की चर्चा चौक–चौराहों पर होने लगेगी। यह चर्चा राजनीतिक शक्ल अख्तियार करेगी। इसे चुनावी मसला बनाने की कोशिश पक्ष–विपक्ष, दोनों तरफ से होगी। उस दौर में ग्रामीण बिहार की आर्थिक मार भी एक मसला बनेगी। उसमें अभी छह महीने का वक्त है। देखना है, इन छह महीने में क्या होता है– गंगा, कोशी, पुनपुन, गंडक जैसी नदियों से तब तक कितना पानी गुजर जाता है। इन घोषित राहत पैकेज में कैश ट्रांसफर की योजनाएं तो लागू होने लगी हैं, पर अनाज या अन्य जरूरी सामान देने की घोषणा शहरों (राजधानी या जिला मुख्यालयों से सटे क्षेत्र) में ही कुछ जमीन पर उतरती दिख रही हैं, ग्रामीण बिहार में अब भी इनके दर्शन नहीं हो रहे।

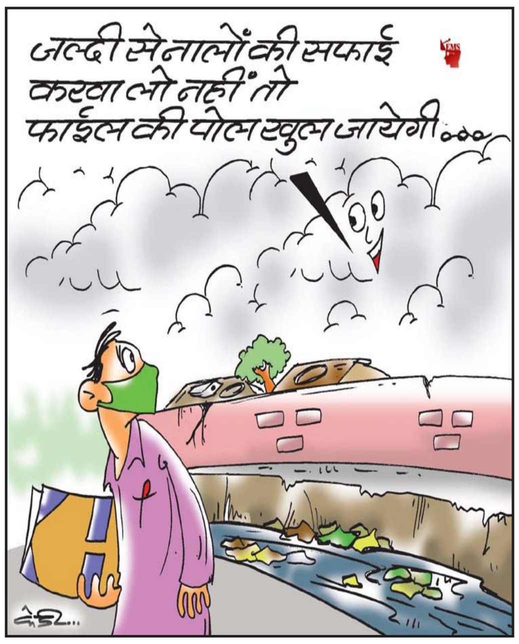

जल्दी से नालों की सफाई करवा लो नहीं तो फाईल्स की पोल खुल जायेगी...
EMS